

50 Years of Statehood of Sikkim

The State of Sikkim is unique in many ways that draw attention from every corner of the world. The land echoes tales of divine blessings, blending tradition and modernity in harmony, creating unity in diversity with strong civic sense.

Sikkim became the 22nd State of India in 1975, shifting from a monarchy to a democracy. Since then, the state has had a 32-member legislative assembly that ensures fair governance and public participation.

Rivers Teesta and Rangeet meander through the mountains and hills, providing water to the people for their needs and for life itself. While the rivers help with farming and agriculture, they also weave folklore of the land.

Mount Khangchendzonga, the tallest peak in the country, blesses every being with radiating crepuscular rays over hills and homes. The foundation of life itself has always revolved around maintaining equilibrium between the flora and fauna and the human communities. This very essence describes the sentiment of every Sikkimese.

The state has recorded forest land area that covers 82.31% of its geographical area. More than 4500 flowering plants with 532 species of wild, indigenous orchids, about 28 species of bamboo and over 300 species of ferns make it a botanist's paradise. In the animal kingdom, more than 600 species of birds and butterflies, red pandas, snow leopards, musk deer, blue sheep, leopard cat, and flying squirrels are some of the species found in this small state.

The remarkable biodiversity of Sikkim also earned the state the first "Mixed Heritage" site of India in 2016, with Khangchendzonga National Park that falls under one of the rare high-altitude national parks of the country.

Since the time Sikkim became the 22nd state of the Indian Union in 1975, Sikkim has experienced changes that make it one of the most distinctive states across the nation through its forward-thinking approaches and people-oriented governance. The state pioneered organic farming by establishing itself as India's first fully organic state through a quiet revolution, which combined traditional agricultural practices with scientific methods. This policy move represented a fundamental expression regarding identity control alongside ecological intelligence. The organic agricultural output from Sikkim has evolved into an important economic resource. Sikkim has emerged as an exceptional eco-tourism destination, which demonstrates how local people can gain from tourism while protecting vulnerable natural environments. The tourism industry in Sikkim now functions as a platform for cultural education while supporting local empowerment through village-run homestays and elderly-led heritage walks. The world discovers Sikkim's monasteries along with its lakes and rhododendron

paths and biodiversity, but it learns about slow living together with humility and coexistence. Sikkim has maintained a tourism policy that differs from exploitative models by establishing a respectful and responsible framework based on reciprocity. The modern tools of today have been accepted by Sikkim in harmony with its cultural wealth. The state continues to lead digital innovation through its high literacy rate by implementing smart villages and electronic government services and sustainable infrastructure.

Better infrastructure now exists throughout the mountains while educational facilities have improved, and both physical and digital connectivity have made significant advancements. Modernisation in this state has preserved traditional practices because it has improved them. Village knowledge centres coexist with monasteries, and solar-powered homes exist in harmony with age-old stone dwellings. Youth who previously migrated for education and employment now have an opportunity to stay at home to establish startups while curating cultural events and working on conservation projects, and developing creative business ideas that reconnect them with their heritage.

The commemoration of Sikkim's fifty years as an Indian state is a journey of people, values, and landscapes. It is about how a small state with a population of just over six lakh people has shown the world that development does not have to come at the expense of identity, that tradition does not have to be opposed to innovation, and that a deep sense of belonging can drive bold futures. Sikkim is always reimagining itself without ever forgetting who it is.

From the first hoisting of the Indian flag in Gangtok to the establishment of institutions that empower its people, from the preservation of Lepcha, Bhutia and Nepali languages to the digital aspirations of the next generation, the story of Sikkim is not a straight line but a beautifully winding path through mountains - each turn offering a new vista, each step grounded in grace. In its quiet strength and gentle wisdom, Sikkim shows us what it truly means to honour one's roots while reaching for the sky.

The Department of Posts proudly issues a commemorative stamp marking 50 years of Sikkim's statehood. It is a tribute to the state's progress and unique identity, and commemorates five decades of unity, development, and contribution to the nation's diversity.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ : Shri Kamleshwar Singh
Cancellation Cachet
Text : Referenced from the content provided by the proponent



डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS

सिक्किम राज्य
की स्थापना के
50
वर्ष



50 years of Statehood of Sikkim



सिक्किम राज्य की स्थापना के 50 वर्ष

अनेक अप्रतिम विशेषताओं से परिपूर्ण सिक्किम राज्य, समस्त विश्व के लिए आकर्षण का केंद्र है। प्रकृति के अनुपम उपहारों से अलंकृत यह भूमि परंपरा एवं आधुनिकता के बीच सामंजस्य का एक सुंदर नमूना है। यहाँ की अनूठी नागरिक सभ्यता अनेकता में एकता को चरितार्थ करती है।

वर्ष 1975 में सिक्किम ने राजशाही त्यागकर लोकतंत्र को अंगीकार किया और यह भारत का 22वां राज्य बना। सिक्किम की 32 सदस्यीय विधान सभा यहाँ निष्पक्ष शासन और जन भागीदारी सुनिश्चित करती है।

तीस्ता और रंगीत नदियाँ सिक्किम की जीवन रेखाएँ मानी जाती हैं। ऊंची-ऊंची पहाड़ियों और गहरी घाटियों से होकर बहने वाली ये नदियाँ न केवल यहाँ के लोगों की रोजमर्रा की जलापूर्ति संबंधी आवश्यकताएँ पूरी करती हैं बल्कि ये यहाँ के लोक-साहित्य के तानेबाने का अभिन्न अंग भी हैं।

इसी राज्य में स्थित देश की सबसे ऊंची चोटी 'माउंट कंचनजंगा' के हिमशिखरों से प्रतिबिम्बित होकर सोंझ के सूरज की प्रदीप्त रश्मियाँ यहाँ के कण-कण को दैवीय आभा से आलोकित करती हैं। यहाँ का जनमानस प्रकृति का अनन्य उपासक है; प्रकृति और मनुष्य के बीच शानदार संतुलन बनाकर चलने की सिक्किमवासियों की जीवन शैली इसका प्रमाण है।

सिक्किम राज्य की वन भूमि, इसके कुल भौगोलिक क्षेत्र का 82.31% है। यहाँ फूलों की 4500 से भी अधिक किस्में पाई जाती हैं, जिनमें से 532 प्रजातियाँ जंगलों व प्राकृतिक बागानों में खिलती हैं। इसके अलावा, यहाँ बांस की लगभग 28 प्रजातियाँ, और पर्णांगों (फर्न) की 300 से अधिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं। अपनी इसी जैविक विविधता के कारण यह राज्य वनस्पति विज्ञानियों का स्वर्ग कहलाता है। यही नहीं, इस छोटे से राज्य में 600 से अधिक प्रजाति के पक्षी और तितलियाँ, लाल पांडा, हिम तेंदुए, कस्तूरी मृग, भड़ल (नीली भेड़), तेंदुआ बिल्ली (Leopard Cat) तथा दुर्लभ उड़न गिलहरियाँ भी पाई जाती हैं।

सिक्किम की विलक्षण जैविक विविधता के अभिन्न अंग और देश में अत्यधिक ऊँचाई पर स्थित दुर्लभ राष्ट्रीय उद्यानों में से एक सिक्किम राज्य के 'कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान' को वर्ष 2016 में यूनेस्को द्वारा "मिश्रित विरासत" का दर्जा प्रदान किया गया। इस प्रकार सिक्किम, देश को यह गौरव दिलाने वाला पहला राज्य बना।

वर्ष 1975 में जब सिक्किम भारतीय संघ का 22वाँ राज्य बना, तब से सिक्किम ने तमाम ऐसे बदलाव अनुभव किए हैं जो इसे पूरे देश में सबसे विशिष्ट राज्यों में से एक बनाते हैं। सिक्किम की दशा-दिशा में यह परिवर्तन वहाँ के लोगों के दूरदर्शी दृष्टिकोण, और वहाँ के जनोन्मुख शासन के माध्यम से हुआ है। सिक्किम राज्य जैविक खेती को बढ़ावा देने वाला अग्रणी राज्य है। सिक्किम ने पारंपरिक कृषि पद्धतियों के साथ-साथ वैज्ञानिक ढंग से जैविक खेती को बढ़ावा देते हुए, एक मूक क्रांति के माध्यम से खुद को भारत के पहले पूर्ण जैविक राज्य के रूप में स्थापित किया है। यह नीतिगत पहल, सिक्किम राज्य की अपनी पारिस्थितिकी के बारे में गहरी समझ के साथ-साथ अपनी पहचान के प्रति उसकी सजगता की अभिव्यक्ति है। सिक्किम का जैविक कृषि उत्पादन राज्य का महत्वपूर्ण आर्थिक संसाधन बनकर उभरा है। सिक्किम राज्य इको-टूरिज्म के एक आकर्षक गंतव्य के रूप में भी विकसित हुआ है, जो इस बात को रेखांकित करता है कि कैसे स्थानीय लोग प्रकृति की रक्षा करते हुए पर्यटन गतिविधियों से आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। सिक्किम के गाँवों में चल रहे तमाम होमस्टे और स्थानीय बुजुर्गों द्वारा संचालित 'विरासत की सैर' (हेरिटेज वॉक) जैसे कार्यक्रमों ने यहाँ के पर्यटन उद्योग को सांस्कृतिक शिक्षा के मंच के रूप में प्रतिष्ठित करने के साथ-साथ स्थानीय जनता का सशक्तीकरण भी किया है। सिक्किम के सुंदर मठों, रमणीक झीलों, बुरांस के वृक्षों से आच्छादित पैदल मार्गों (ट्रैक) और यहाँ की जैव विविधता से आकर्षित होकर आने वाले विश्वभर के पर्यटक यहाँ के लोगों की सादगी और सह-अस्तित्व की भावना से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाते। सिक्किम की

पर्यटन नीति शोषणकारी पर्यटन मॉडलों से अलग है। यह परस्पर सम्मान और उत्तरदायित्व पर आधारित है। सिक्किम ने आधुनिक उपकरणों और सांस्कृतिक संपदा के बीच शानदार सामंजस्य स्थापित किया है। सिक्किम राज्य ने स्मार्ट गांवों और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के माध्यम से प्रदान की जाने वाली सरकारी सेवाओं तथा टिकाऊ बुनियादी ढांचे से संबंधित तमाम कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक लागू किया है। यह राज्य अपनी उच्च साक्षरता दर के बल पर डिजिटल नवाचार के क्षेत्र में भी अग्रणी बना हुआ है।

वर्तमान में इस पर्वतीय राज्य में बेहतर मूलभूत ढांचा मौजूद है; यहाँ की शैक्षणिक सुविधाएँ बेहतर हुई हैं और जमीनी तथा डिजिटल कनेक्टिविटी के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। सिक्किम राज्य ने आधुनिकीकरण के माध्यम से अपनी पारंपरिक प्रथाओं में सुधार करते हुए उन्हें संरक्षित करने का काम किया है। यहाँ के आधुनिक ग्रामीण शिक्षा केन्द्र और स्थानीय मठ सह-अस्तित्व बनाए हुए हैं; पत्थरों से बने पुरातन घर और आधुनिक सौर ऊर्जा चालित मकान एक साथ गर्व से खड़े हैं। पूर्व में, शिक्षा और रोजगार के लिए पलायन करने वाले युवाओं को अब राज्य में ही तमाम सांस्कृतिक कार्यक्रम क्यूरेट करने, संरक्षण परियोजनाओं पर काम करने और रचनात्मक बिजनेस आइडियाज विकसित करने हेतु स्टार्टअप स्थापित करने के अवसर प्राप्त हो रहे हैं। जिससे वे पुनः अपनी विरासत से जुड़ रहे हैं।

सिक्किम राज्य की स्थापना के पचास वर्ष पूरे होने का यह उत्सव यहाँ के लोगों, मूल्यों और प्राकृतिक सुंदरता का उत्सव है। यह इस सच का उत्सव है कि कैसे लगभग छह लाख मात्र की आबादी वाले इस छोटे से राज्य ने विश्व को दिखा दिया है कि अपनी पहचान गंवाए बिना प्रगति संभव है, यह जरूरी नहीं कि परंपरा और नवाचार परस्पर विरोधी हों और यह कि अपनी जड़ों से जुड़कर भी विकासोन्मुखी भविष्य का मार्ग तय किया जा सकता है। सिक्किम अपनी मौलिकता को गँवाए बिना खुद को नित नए कलेवर में ढाल रहा है।

गंगटोक में पहली बार भारतीय ध्वज फहराये जाने से लेकर, यहाँ के लोगों के सशक्तीकरण के लिए तमाम संस्थाओं की स्थापना किए जाने तक; लेप्चा, भूटिया और नेपाली भाषाओं के संरक्षण के लिए उठाए गए कदमों से लेकर, आने वाली पीढ़ी की डिजिटल आकांक्षाओं तक; सिक्किम की कहानी कभी भी एक सीधी-सपाट रेखा नहीं रही है, बल्कि यह पहाड़ों के बीच से गुजरने वाले एक ऐसे खूबसूरत घुमावदार मार्ग की तरह है – जहाँ आपको हर मोड़ पर नया नजारा देखने को मिलता है, और कदम-कदम पर शालीनता व सभ्यता के दर्शन होते हैं। सिक्किम हमें, अपनी अविचल शक्ति और उदात्त ज्ञान से, सफलता के शिखर की ओर अग्रसर रहते हुए भी अपनी जड़ों के प्रति सम्मान का भाव रखने के सच्चे मायने समझाता है।

डाक विभाग सिक्किम राज्य की स्थापना के 50 वर्ष पूरे होने के अवसर पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए गौरव का अनुभव करता है। यह डाक टिकट सिक्किम राज्य की प्रगतिशीलता, उसकी विशिष्ट पहचान तथा राष्ट्र की विविधता, अखंडता और प्रगति में पिछले पांच दशकों में उसके अतुलनीय योगदान का प्रतीक है।

आभार:

डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/श्री कमलेश्वर सिंह
विवरणिका/विरूपण कैशे
पाठ : प्रस्तावक द्वारा प्रदत्त सामग्री से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500p
मुद्रितडाक—टिकटें	: 305757
Stamps Printed	: 305757
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00